मनुष्य बनो

वा०मू०
६-००

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

दयाल फकीर की जीवनी	३)५०
मानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
मानव धर्म प्रकाश भाग २ (श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)५०
सार का सार भाग १ व २	५)
गरुड़ पुराण रहस्य	१)७५
सन्त सत्गुरु वक्त	१)५०
अगम वाणी भाग १, २, ३	३)
सतप:	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)५०
सुरत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)२५
मेरी धार्मिक खोज	१)२५
गुरु महिमा	१)
गुरु वन्दना	)७५
अजायब पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
पांच नाम की व्याख्या	१)५०
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
नाम दान	१)
उस घर की खोज	१)
अगम विकास	१)
निर्वाण	१)
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेट भाग १ व २	२)५०
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	६)
अदभुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२
मानवता युग धर्म	८)०५
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)२५

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❀ मनुष्य बनो ❀

सितं १९७- वर्ष २८ | भाद्रपद सं० २०३५ वि० सितम्बर, १९७८ | संख्या १२

गुरू महिमा

रूप अरूप सरूप अनूप, कहे कोई महिमा क्या तेरी ।
आनन्दघन सत चित्त अगोचर, बुद्धि लहै कैसे गति तेरी ॥
सिंधु अपार महिमा अति निर्मल, अमल विमल से पार गुरु ।
पार अपार की गम नहिं तुझमें, अपरम्पार से पार गुरु ॥
माया कुतीता चरित पुनीता, व्यापक विरज महान है तू ।
सर्व स्वरूपी सर्व व्यापी, मंगल मय निज ज्ञान है तू ॥
सर्व अधारा रहित विकारा, सबका सबसे न्यारा है ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, तेरा ही मुझको सहारा है

—०—

सम्पादकीय :---

गुरु शरणम् गच्छामि

प्रत्येक मनुष्य जीवन में सुखी रहना चाहता है। चिन्ताओं से मुक्त रहना चाहता है परन्तु यह कैसे सम्भव हो सकता है। मन के विचारों का ही परिणाम हमारे जीवन पर पड़ता है, अगर पिता-पुत्र स्त्री-स्वामी, भाई-भाई, अथवा चाहे पड़ौसी ही क्यों न हो अगर मन में किसी भी प्रकार का एक दूसरे के लिये द्वेष है तो अशान्त होना स्वाभाविक है। इसके अलावा हमारे दैनिक जीवन में भी बाह्य वातावरण का, संगत का, तथा हमारे अपने ही कर्मों का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़े बिना रहता नहीं है। यह सब जीवन में अशान्ति का कारण होते हैं।

हमारा अपना ही मन इस लोक का ही नहीं बल्कि त्रिलोकी का भी स्वामी है। मन की संकल्प शक्ति से ही सब कुछ हासिल किया जा सकता है मगर मन को सही दिशा दिखाने, उसका सदुपयोग करने के लिये भी किसी सहारे की जरूरत होती है किसी की शिक्षा की जरूरत होती है और वह शक्ति कौन सी है जो मन को काबू करने का मार्ग बताती है वह है किसी सतपुरुष, परमपुरुष, संत सतगुरु वक्त, का सतसंग। जब तक मनुष्य को किसी गुरु की शरण नहीं मिलती है तब तक संसार में उसको सुखमय जीने का रहस्य नहीं हासिल हो सकता है। जब तक गुरु नहीं मुक्ति नहीं, गुरु बिना न तो ज्ञान मिलता है और न सच्ची राह ही दिखाई देती है। जो स्वयं को ही महापुरुष मानते हैं, ज्ञानी समझते हैं उनको इस आवागमन से छुटकारा नहीं मिलता है. ऐसे मनुष्य अंधकार में रहते हुये हमेशा क्लेश में डूबे रहते हैं जिसने इस रहस्य को समझ लिया अपने आपको गुरु चरणों में अर्पित कर दिया उनको जीवन में ही अभयदान स्वयं ही मिल गया। शिष्य को जब यह यकीन होजाता

है कि स्वयं गुरु ही जिसके रक्षक है उसका संसार में कोई भी बाल बाँका नहीं कर सकता है। जीवन में हर समय यह भरोसा हो जाता है कि मेरा अहित हो ही नहीं सकता है तुम इस रहस्य को जानो या न जानो।

इसलिये अगर जीवन में चिन्ता रहित सुखी जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो अपने आपको उस परम शक्ति को अर्पित करदो, अपने मन को गुरु के चरणों से बाँध दो और फिर देखो जीवन का आनन्द।

प्रभूदयाल मीतल

—०—

दयाल मानवता प्रचारक संस्था (रजिस्टर्ड) नई दिल्ली

२७वां वार्षिक दसहरा मानवता सन्त सम्मेलन

तेरी मौज से रहकर निस दिन सुखी हूँ।
नहीं भय न चिन्ता न जग से दुखी हूं॥

मानवता सन्त सम्मेलन दसहरा के शुभ अवसर पर सलवान पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर पुराना, नई दिल्ली में दिनाँक १०–११ अक्टूबर, १९७८ को परम सन्त हजूर पीरेमु गा साहिब जी महाराज की अध्यक्षता में होगा।

सज्जनो ! इस समय संसार में अज्ञानता के कारण अशान्ति और दुखों के बादल छाए हुए हैं। शारीरिक संसारिक और मॉसिक दुखों ने मानव को बुरी तरह घेर रखा है। सन्त समझते हैं कि ईर्षा, द्वेष जलन, घृणा और धार्मिक दीवारों में फँस कर अपने अनमोल जीवन को नष्ट मत करो यह मानव चोला बार-२ नहीं मिलता। सच्चे मानव बनकर सुख शान्ति और आनन्द का जीवन गुजारो।

हर साल की तरह इस साल में दसहरा सतसंग के शुभ अवसर पर हिज होलीनैस परमसन्त परमदयाल हजूर पण्डित फकीरचन्द जी

महाराज (होशियारपुर वाले) अमरीका टूर से वापिसी पर दिनाँक ६ अक्टूबर १९७८ को देहली पधार रहे हैं आप अपने ९३ साल के जीवन अनुभव तथा तपस्या के आधार पर बड़े सरल रूप से आपको बतायेंगे कि गृहस्थ में रहकर सच्चे मानव बनकर अपने संसारी कर्तव्य को पूरा करते हुए मालिक की मौज में रहकर शान्ति आनन्द निश्चित रहते हुए हम किस प्रकार मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। इनके अतिरिक्त आंध्र प्रदेश हैदराबाद से संत दयालानन्द (आनन्दराव) जी महाराज, हरियाणा से सन्त ताराचन्द जी महाराज, चण्डीगढ़ से प्रोफेसर विशिष्ट जी महाराज आचार्य सनातत धर्म देहली से सन्त दर्शनसिंह जो महाराज तथा दूसरे महा अनुभवी पुरुष अपने विचार आपके सामने रखें तो ठीक समय पर पधारकर अपने मित्रों सहित इस अनमोल सतसङ्ग और शुभ अवसर का लाभ उठाए।

नोट :—लंगर तथा ठहरने का प्रबन्ध दिल्ली के बाहर से आने वाले प्रेमी भाइयों के लिए पहले की तरह दयाल मानवता प्रचारक सभा की तरफ से १० अक्टूबर (प्रातः और सायं) और ११ अक्टूबर केवल प्रातः के लिए होगा।

२—दिल्ली से बाहर के आने वाले प्रेमी भाई ६ अक्टूबर दिन को किसी भी समय सलूवान पब्लिक स्कूल में आकर ठहर सकते हैं लेकिन वो अपने विस्तर साथ लाए।

प्रोग्राम :—१० अक्टूबर मंगलवा—प्रातः ६ बजे से ११ बजे
सायं ३ बजे से ५ बजे
११ ,, बुधवार प्रातः ६ बजे से १२ बजे

शुभ सूचना—सभा की ओर से एक धार्मिक लाइब्रेरी स्थापित है जिस में महर्षि शिवब्रतलाल बर्मन परमदयाल फकीर साहिब कबीर जी तथा दूसरे संत महात्माओं की किताबें हैं प्रेमी सज्जन निम्न पते पर सभा के कार्यालय में पधारकर लाभ उठा सकते हैं।

निवेदक और दर्शनाभिलाषी :—नन्दलाल सच्चदेवा उर्फ आनन्दयाल जनरल सचिव, दयाल मानवता प्रचारक सभा (रजिस्टर्ड) दुकान नं० १०६ के पीछे शंकर रोड मार्केट न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली-६०

सत्संग

हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर

दिनाँक ७-७-७८

राधास्वामी !

सबसे पहले मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तूने यह मुसीबत अपने गले क्यों डाललीं ? इसका उत्तर केवल एक ही है, मेरे कर्म। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा हम किसी को मान लेते हैं और उसकी जिम्मेदारी हमारे सिर पर आ जाती हैं। स्त्री एक आदमी को अपना पति मान लेती है। पुरुष पति एक स्त्री को अपनी पत्नि मान लेता है मानने से हमारे सिर पर एक जिम्मेदारी आ जाती। मैंने दाता दयाल को मालिक माना था। उनकी आज्ञा और मेरा अपना कर्म कि अपना अनुभव कह जाऊँगा।

कल मैंने कहा था कि मन का रूप बताऊँगा कि मन क्या चीज हैं ? कबीर साहिब फरमाते हैं:-

मन को मारु पटक कर टूक टूक हो जाये।
बिष की क्यारी बोय कर लुन्ता क्यों पछिताय ॥

कबीर साहिब यह कह गये। मैं अपनी आत्मा से पूँछता हूं कि मन क्या चीज है ? अगर तुम मन को समझना चाहते तो सोचो कि हम तुम कौन हैं और कहाँ से आये हैं ? हम और तुम सब मां के पेट से ही आये हैं। सब जानते हैं कि माँ के पेट में बाप के वीर्य का एक कीड़ा गया। हमारा तुम्हारा असली आद क्या है ? आज हम छः छः फुट के जवान बन गये हैं कोई राज मन्त्री बना और कोई चोर कुछ बनकर बात करते हैं हमारी असलियत क्या है ? एक वीर्य का सुपर मेटोरिया जर्म जो बाप के मस्तिष्क में था वह कहाँ से आया ? बाप के वीर्य से। वीर्य, ओजस से बना, ओजस खून से बना, खून

खुराक से बना, खुराक कैसे बनी ? जब तक सूर्य, चाँद सितारों की किरणें न हों इस धरती पर चीज पैदा नहीं होती, इसलिये हमारे अन्दर जो वीर्य में चोज थो उसका आद क्या ? रोशनी, प्रकाश जब जब प्रकाश स्थूल अवस्था में आता है तो उसमें से सनसनाहट पैदा होती हैं जिसका नाम मन है ।

जमीन में तरी (नमी) है । जब सूर्य की किरणें उस पर पड़ती है तो जो बोज उसमें पड़ा हुआ है, वह फूटता है । बीज मिलता है अर्थात फटता है उसके अन्कुर, बने और टहनियाँ निकलती हैं वह मन है । हमारा असली रूप क्या है और हम कौन ? हम प्रकाश स्वरूप नर रूप या आत्म स्वरुप जब वह प्रकाश स्थूल शरीर में आता है तो असके अन्दर एक सनसनाहट पैदा होती है अर्थात एक प्रकार की Energy पैदा है उसमें से मन चित्त बुद्धि अहंकार और ज्ञान इन्द्रियें पैदा होती हैं । जब वह शरीर में आता है तो कर्मइन्द्रियें बन जाती हैं । फिर हमारा मन क्या हुआ ? जब प्रकाश किसी बजद में आता है तो उसके आने के कारण जड़ और चेतन की ग्रन्थि बन जाती है । जड़ प्रकृति और चेतन प्रकाश स्वरूप है । एक सनसनाहट पैदा होती है जिसका नाम मन है ।

यह मन हर आदमी का एक जैसा नहीं हो सकता । मेरे और बिचार तुम्हारे और, और किसी ओर क्यों ? हमारा शरीर भिन्न-२ प्रकृति से बना है । यह प्रकृति कैसे बनती ? यह ग्रहों अर्थात सितारों, सूर्य, चाँद, ब्रहस्पति शुक्र आदि जितने सितारे हैं उनके प्रभाव से हमारा शरीर बनता है । उसमें जब प्रकाश रूपी आत्मा आता है तो मन बन जाता है । हमारे शरीर के केन्द्र (Centre) बने हुये है । हमारी खोपड़ी के अन्दर जैसे जैसे ग्रहों के प्रभाव पड़ते हैं या जैसा हमारा केन्द्र है वैसा वैसा हम सोचने के लिये विवश हैं । एक आदमी के नीच ग्रह पड़े हुये हैं वह लाख यत्न करे, जो जी चाहे करे, उसका

मन शुद्ध विचार नहीं रख सकता। यह किसी के बस की बात नहीं है। इस वास्ते संत इस संसार के पैदा करने वाले को जालम कहते हैं। जिस Creatur - ने इस संसार को बनाया है उसका नाम Universal mind है अर्थात ब्रह्मन्डी मन। संत उसे निर्दयी और जालम कहते हैं। क्यों ? वृक्षों पर हरे पत्ते लगते हैं। इनको कीड़े खाते हैं। एक कीड़ा दूसरे कीड़े को दूसरा कीड़ा तीसरे कीड़े को खाता है। बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है। हर एक चीज एक दूसरे को खाती है। इसलिये संतो ने कहा है कि सृष्टि में काल और माया है।

उस काल ब्रहनन्डी मन ने हमारे शरीर को बनाया नाना प्रकार के सितारों और ग्रहों से हमारा शरीर बन गया जो चीज शरीर में रहती हुई मन को और प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह और चीज है। असल में हम तो वह हैं। जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वे तुम या हम हैं। जब हम सूचना के क्रम में इस शरीर में आते हैं तो उन ग्रहों के अनुसार हमारे अन्तर विचार पैदा होते हैं। जिस प्रकार के तुम्हारे विचार होंगे वैसी तुम्हारी क्या दशा होगी। जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति। ये संत कहते है मगर मेरा अनुभव इसके उलट है जिस प्रकार के ग्रह किसी को पड़े हुये होते है अर्थात प्रकृति के जैसे तत्वों से किसी का शरीर बना हुआ होता। जब प्रकाश रूपी आत्मा उसमें आता है तो वह उसी प्रकार के विचार उठाने के लिये विवश है। उसके वश की कोई बात नहीं। बड़े बड़े संतो को कष्ट हुआ। जब उनके ऊपर बुरे ग्रह का प्रभाव हुआ तो वे गिर गये। पाण्डवों पर उनके कर्म अनुसार बारह साल साढ़सति रहो, शनि आ गया यद्यपि कृष्ण जी अवतार थे। क्या कृष्ण जी ने उनके दुखों को दूर किया ? नहीं। इस वास्ते भगवान ने हर व्यक्ति को अपने ही रूप पर बनाया हुआ हैं। जो असली चींज हमारे अन्तर प्रकाश देखती औ

शब्द को सुनता है वह ईश्वर ने नहीं बनायी। ईश्वर परमेश्वर प्रकाश और शब्द से बिलकुल अलग चीज है। इसका अनुभव मुझे कृषक जैसे सत्संगियों की दशा से हुआ। क्यों? जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि अन्तर जो विचार या संकल्प पैदा होता है यह मेरे ही मन का संस्कार है, कोई बाहर से नहीं आया। फिर मैं मन को छोड़ जाता हूँ। आगे है प्रकाश और शब्द। जब तक आदमी मन के संकल्पों को जोड़कर शब्द और प्रकाश में नहीं चला जाता वह इस रचना से बाहर नहीं जा सकता। यह बात मेरी समझ में आई है। इस वास्ते संतों ने सुरत शब्द योग बताया है, मन का योग नहीं, सुरत हमारे अन्तर शकलें प्रकाश, सूर्य चाँद को देखती और शब्द को सुनती है। वह असल में तुम और मैं हूँ मगर हमें उसका पता नहीं लगता। हमने अपने आपको मन समझा हुआ है। इस वास्ते वह सुरत मन में रहते हुये अपने रुप को न जानती हुई सोचती और आशा करती रहती है।

हम कैसे जालम हैं? जिस प्रकार परमात्मा या ब्रहनण्डो मन ने इस संसार को पैदा किया है। हम भो स्वाद के लिये बच्चे पैदा करते हैं। क्या हम सोचते हैं कि इस बच्चे के साथ क्या होगा? क्या यह T. V. या Cencer या दूसरे कष्टों में फँसकर मरेगा? नहीं। कोई नहीं सोचता क्या हम जालिम नहीं हैं? मैं सोचता हूँ अगर मैं गलत हूँ तो कोई महात्मा मेरा खण्डन करे कि ताकों को छोड़ो। इस वास्ते इस संसार से बचने के लिये संतों का नामदान है दूसरे आदमियों के लिये नहीं। इस वास्ते किसी को नाम नहीं देता कोई अधिकारी हो तो नाम दूँ। संसार तो संसार के चक्कर में है। संतो का मार्ग सर्व साधारण के लिये नहीं है सर्व साणारण के लिये यहीं है जो कबीर साहिब ने कहा:.

मन को माँरुँ पटक कर, टूक टूक हो जाये।
बिष की क्यारी बोय कर, लुन्ता क्यों पछिताय॥

।। मनुष्य बनो ।।

हमारे अन्तर जो मन, चित, बुद्धि अहंकार पैदा होते हैं उनसे हम गलत विचार लेते हैं और अपने कर्म का फल आप भोगते हैं। मैं जो काम कर रहा हूँ उसका कौन जिम्मेदार है ? मैं आप जिम्मेदार हुँ। बानवे साल की आयु में धक्के खाता हूँ। क्यों ? मेरे ही मन नें सोचा था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। मेरे ही मन में दातादयाल को राम का अवतार और मालिक का रूप समझा था। वह राम के रूप थे या नही थे परन्तु मैंने माना। यह फल मुझे मेरे ही मानने का मिला। मुझे उनकी आज्ञा माननी पड़ी। जब तक हम इस ब्रहमंडी मन में हैं इसके जिम्मेदार कोन हैं ? असल में हम आप है। जो आदमी रोगी होता है उसे सन्तान बिलकुल पैदा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि उसका प्रभाव उसके बच्चों पर आयेगा। कई बीमारियाँ पैतृक (खानदानी) होती हैं। कई बीमारियां दादा दादी नाना, नानी को होती है वे उनके बच्चों में आजाती हैं। इसलिये जो बीमार आदमी बच्चे पैदा करते हैं वे जालिम नहीं तो कौन हैं। दूसरे हम अपने ही विचारों से दुखी और सुखी होते हैं इसलिए वेद मार्ग है, 'शिव संकल्प अस्तु' अच्छा विचार रखो। हमारे ऋषि गलत नहीं थे। क्या हम हिन्दू कहलाने वाले हिन्दू हैं ? हिन्दुओं का क्या धर्म है ? पच्चीस साल तक ब्रह्मचर्य रखो कोई रखता है तो मुझे बताओ।

मन क्या है ? जब प्रकाशरूपी आत्मा शरीर में आता है तो जिस प्रकार की शरीर की प्रकृति होगी उसके अनुसार उसमें फुरना होगी। मेरे ग्रह ऐसे है। मुझे कर्क में चन्द्रमा पड़ा हुआ है। मगर मैं इस लाइन पर आया तो विवश हूं। जब किसी के बीच ग्रह आजाते हैं तो वह अपने आपको लाख सम्भाले वह सम्भल नहीं सकता - वह जानता है कि वह गलती कर रहा है मगर फिर भी वही काम करता है। सन्त कहते हैं भाई। इस मन को सम्भालो—

मन को मार पटक कर, टूक टूक हो जाये।
विष की क्यारी बोयकर, लुन्ता क्यों पछताये ॥

विष का अर्थ जहर है। कबीर साहिब कहते हैं जो हम बुरी बात सोचते हैं किस से हमारी द्वेष घृणा है उसका फल हमें मिलता है। वह कहते हैं इस तन को पटक मारो। कबीर साहिब ने अपने मन को कैसे पटका इसका मुझे पता नहीं। मैंने अपने मन को कैसे काबू किया यह मैं जानता हूँ। मैं आप लोगों, कृषक जी जैसे सज्जनों की दया से मन पर काबू करने योग्य हुआ। कैसे ? जब से पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे विश्वास होगया कि मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रकट होता है मेरी अपनी ही फुरना है बाहर से कुछ नहीं आता। अब जब कोई विचार मेरे अन्तर प्रकट होता है तो मैं उसे न समझ कर उसमें फँसता नहीं। कई बार मेरे अन्तर ऐसे विचार पैदा होते हैं जिनको मैं नहीं चाहता मगर वे उठते हैं। क्यों ? बाहरी प्रभावों से। जो कुछ हम देखते, सुनते और विचार करते हैं उनका नक्शे चित्र, हमारे चिताकाश पर पड़ता है जिस प्रकार सिनेमा में परदे पर स्त्रियाँ नाचती हैं, कत्ल होते हैं, घोड़े दौड़ते हैं, हवाई जहाज उड़ते हैं। क्या सच मुच वहाँ घोड़े, स्त्रियाँ और हवाई जहाज होते हैं ? नहीं वह फिल्म होती है उसके पीछे रोशनी का बल्ब होता है रोशनी के कारण फिल्में चलती फिरती दिखाई देती हैं। इसी प्रकार जिस जिस प्रकार के संस्कार हमारे मस्तिष्क पर पड़े हुए होते हैं वही संस्कार हमारे अन्तर फुरते हैं जिसको वह ज्ञान हो जाता है कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरता है वह फिल्म है उसका प्रभाव उस पर नहीं होगा। इंजीनियर साहिब समझते हो मैंने क्या कहा इसका नाम ज्ञान है। इसलिये कहते हैं ज्ञानी को पाप नहीं। क्यों ? क्योंकि वह जानता है कि जो कुछ उसके अन्तर फुरता है वह असल में है नहीं। यह आधी गजल है। जिसको यह ज्ञान हो जाता है उसकी आधी गजल

।। मनुष्य बनो ।।

हो जाती है। जब तक वह शरीर में है मन से काम लेगा मगर इसमें फँसेगा नहीं, मन के ऊपर कब क्या पड़ते हैं? जिस काम के करने में हमारा निजी स्वार्थ होता है उसका नक्शा हमारे मन पर रहता है। मगर हम जो काम निष्काम करते है उसका प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर नहीं पड़ता। इसका प्रमाण यह है कि मुझे कभी भी मन्दिर स्वप्न में नहीं आया आप लोग गोपालदास और बहुत से लोग जो मुझसे प्यार करते हैं कभी स्वप्न में नहीं आये मगर रेल-गाड़ी, तार, माँ, बाप, बीबी, और कभी-कभी भाई और लड़का अवश्य मेरे स्वप्न में आजाते हैं। क्यों? क्योंकि मैंने पेंट की खातर नौकरी की। मेरे पास किंग जार्ज, चरचल कमाँडर इन चीफ और वाइसराय के अच्छा काम करने के सार्टीफिकेट हैं। मुझे सार्टी-फिकेट क्यों मिले? क्योंकि मैंने उस काम को दिल लगा कर किया मुझे अब तक भी स्वप्न में उसका प्रभाव नहीं छोड़ता। मगर आप कृष्णजी, तुम गीता इतना प्यार करती हो कभी स्वप्न में नहीं आई। तो इससे मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि अगर संसार के संस्कार नहीं चाहते तो निष्काम कर्म करो और यही गीता कहती है। कई बार मैं कहता हूँ कि मानव का शरीर एक रेडियोस्टेशन है। उसके अन्तर से Radiation निकलती रहती है। मैंने एक किताब पढ़ी है जिसमें लिखा है कि हर उँगली में से किरणें निक-लती रहती हैं, साइन्सदानों ने उसके चित्र लिये हैं। अगर मैं तुम लोगों से प्यार करूँ तो तुम्हारी Radiations मुझमें आयेगीं। हर एक आदमी के पाँवों की उँगलियों में Radiations निकलती रहती है हम जिस समय किसी के सम्पर्क में आते हैं तो हम पर दूसरों का प्रभाव पड़ता है। कुछ हमारे मन का संकल्प होता है और कुछ दूसरों के प्रभाव हम पर पड़ते हैं।

मैं हर रोज प्रातः समाधी में जाता हूँ। पाँच छः दिन की बात है जब मैं प्रातः समाधी में गया तो मैंने बहुत यत्न किया मगर मेरा

मन अनेक प्रकार के विचार उठाता रहा। कभी कोई शक्ल कभी कोई शक्ल मैं घबरा गया यद्यपि मैं जानता था कि जो शक्लें मेरे सामने आरही हैं ये कल्पित हैं मगर मन से नहीं निकलता था। फिर मैं मन को भूल गया। मैंने अपने इष्ट शब्द को सुरत से पकड़ने का यत्न किया। मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि वे शक्लें क्यों आईं ? जब मैं आरहा था तो बहुत से प्रेमी लोग मेरी बीमारी को देखकर सहानुभूति से मेरे पास आये। उन्होंने मुझे प्रेम किया। मैंने भी उनसे प्रेम किया। क्योंकि मेरे दिल में उनके लिए प्रेम पैदा हुआ इसलिये उनके संस्कार मेरे मस्तिष्क पर पड़े जिसके कारण मेरे मस्तिष्क के अन्तर शक्लें आने लगीं। अपने मन को काम (वश) में रखना है उसके लिये अच्छा इलाज यह है कि वह निष्काम बने और अच्छी संगत रखे। आप मुझे मत्था टेकते हो, आप समझते हैं कि आप का प्रभाव मुझ पर नहीं आता। यह तो विज्ञान का नियम है, अगर मेरा आप पर जाता है तो क्या तुम्हारा प्रभाव मुझपर नहीं पड़ेगा ? आयेगा। अगर मैं तुम लोगों से अपने निजी स्वार्थ के लिये प्यार करता हूँ इन्जनीयर साहिब गीता आदि कि इनसे मुझे कुछ मिलजाये तो फिर तुम्हारे विचार मेरे मस्तिष्क पर आयेंगे। मैं बच नहीं सकता। इसलिये कहा गया है:—

शिष्य को ऐसा चाहिये, गुरु को सब कुंछ दे।
गुरु को ऐसा चाहिये, शिष्य का कुछु न ले॥

संगत का प्रभाव पड़ता है। यह Law of Radiation है। बच नहीं सकते। अगर तुम निष्काम हो तो फिर तुम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अगर सकाम हो बुरी संगत है तो तुम्हारे विचार बदल जायेंगे। उस मन को बदलने का क्या ढंग ? अच्छी संगत रखो और तुम्हें यह ज्ञान होना चाहिये कि जो कुछ मन है माया संकल्प और संस्कार है, असल में कुछ नहीं तब मानव बच सकता है अन्यथा इस मन से बचने का कोई ढ़ंग नहीं है। मैं अब भी गिर जाता हूँ मगर

मगर क्योंकि मुझे यह ज्ञान है कि यह माया है मैं फँसता नहीं किसी समय जब यह भूल जाता हूँ तो मैं भी फँस जाता हूं। कबीर साहिब कहते हैं:-

यह मन फटक पछारे ले, सब आपा मिट जाय।

जिस प्रकार स्त्रियें छाज से पछोड कर अर्थात छाँट कर अनाज में से गन्द गन्द निकाल देती हैं उसी प्रकार अपने मन को पछो डालो

यह मन फटक पघोरे, सब आप मिट जाय।
पंगुला होय पिव पिव करे, ताको काल न खाय।।

मन की चंचलता को गिराने के लिये इश्क मजाजी की आवश्यकता है। संसार की किसी भी चीज से प्यार करने को इश्क मजाजी कहते हैं। जब तक किसी को इश्क मजाजी नहीं है वह संसार में सफल नहीं हो सकेगा। इश्क मजाजी का भाव केवल स्त्री के साथ प्रेम ही नहीं है। किसी एक की सेवा का विचार लेलो चाहे वह माता पिता की सेवा हो या देश की सेवा हो बाकी के सब विचार अपने आप समाप्त हो जायेंगे फिर अगर तुम्हें कोई संत मिल जाये तो तुम एक को छोड़कर अपने आप में चले जाओगे। केवल इश्क उस प्रीतम और मालिक का। तुम तो दिवानो। फकीरचन्द को पूजते हो। गुरु फकीरचन्द का नाम नहीं है। तुम भूल में हो। फकीर चन्द की येही पूजा है जो तुम करते हो मेरी बात को सुनना, समझना और गुरु की भक्ति है बाकी अन्तर में इष्ट है वह तुम्हारा अपना ही आप है। आरम्भ में एक का सहारा पकड़ो उससे क्या होगा ? जितने बाकी के विचार होंगे वे सब समाप्त हो जायेंगे। हर आदमी अन्तर में अभ्यास नहीं कर सकता जिसको बाहर कुरबानी करने की आदत नहीं है। एक व्यक्ति अपने मां बाप की सेवा निष्काम करता है लेकिन आज कल लोग माँ बाप की सेवा स्वार्थ वश करते हैं कि हमें सम्पत्ति मिल जाये। जो इस प्रकार सेवा करते हैं उनको सेवा का फल नहीं मिलता। मैंने निष्काम सेवा को

है। मैंने माँ बाप और गुरु की निष्काम सेवा की यथार्थ मेरा बाप सिपाही था और उनके धन धान्य नहीं था। जो आदमी निष्काम सेवा करता है उसका मन निर्मल हो सकता है इस वास्ते राधा स्वामी मत में गुरू सेवा है। अगर तुम और किसी की निष्काम सेवा करो तब भी तुम्हारा मन निर्मल हो जायेगा। यह आवश्यक नहीं गुरू की ही सेवा करो किसी की सेवा करो तुम्हें ज्ञात हो जायेगा। पिछले जमाने में स्त्रियें पति की सेवा किया करती थीं उन्हें ज्ञान हो हो जाता था। आपने बाबा फरीद की कहानी सुनी होगी। बाबा फरीद ने बारह साल लकड़ी की रोटी पेट पर बाँधकर तप किया था उसको क्या मिला ? बाहर आया। चिड़ियें देखीं, कहा चिड़ियों मर जाओ चिड़ियें मर गई चिड़ियाँ उड़ जाओ वे उड़ गई। अब उसे अहंकार हो गया। फिर वह एक जगह भीख माँगने के लिये गया जहाँ द्वारपर घर की मालिक खड़ी थी वह दस पन्द्रह मिनट के बाद बाहर आई उस पर बाबा फरीद को बहुत क्रोध आया। मैं चिड़ी नहीं हूँ जो मर जाउँगी। वह बड़ा चकित हुआ और पूछने लगा कि तुमने यह शक्ति कहाँ से पाई। उसने कहा कि तू तो बारह साल भूख से मरता रहा और तप किया मैंने पति की सेवा से शक्ति पाई है। तुम्हें मैं एक नुक्ता बताती हूँ। पति की क्या सेवा थी ? उसने कहा मैं विवाहित थी। अपने पति के पास गई उसने कहा पानी पिलाओ जब मैं पानी लेकर वापिस आई तो पति सोया हुआ था। मैं पानी लेकर खड़ी रही और उसकी ओर देखती रही कि कब उठे और पानी पिलाऊँ दो तीन घण्टे बीत गये। यह दो तीन घन्टे का जाटक था उस जाटने उसके अन्तर यह सारा ज्ञान पैदा किया।

अब दूसरी बात सुनो। हम बसरे बगदाद में Day House में अलग रहते थे। मेरी मर जाई लाजवन्ती को हर बारह या पन्द्रह दिन के बाद मासिक धर्म आता था। संतान पैदा होने कोई आशा नहीं थी। वह हमें रात को दूध देती थी। मैं और पण्डित पुरुषोत्तम

दास ने वहां सायंकाल अभ्यास किया फिर सो गये। वह दूध लेकर आई। वह हम दोनों से परदा करती थी, घूँघट निकालती थी। और बोलती नहीं थी बारह बजे के लगभग पुरूषोत्तम की आँख खुली तो उसने शोर मचाया, चोर चोर। जब उसने चोर चोर कहा तो वह खांसने लगी। उसी समय हम समझ गये कि यह लाज बन्ती है। जब मैंने समय देखा तो वह कम से कम तीन घण्टे वहाँ खड़ी रही। मैं इस नियम को जानता था। मैंने उठ कर मरगाई को को छाती से लगाया और कहा ! तेरे बहुत संतान होगी और यही हुआ उसके बहुत संतान हुई। वह बहुत सुखी रही। यह मेरा अनुभव है।

तुम लोग अभ्यास करते हो, विशेष कर कृषक जी के सत्संगी, उनको कहना चाहता हूं। कि ध्यान योग किया करो यह बाहर का ध्यान योग है जो मैंने बताया है आप अन्तर का ध्यान योग किया करो। गुरू का रूप बनाकर उसका मस्तिष्क और आँखों देखा में करो। जितना तुम साधन करोगे उतनी ही सिद्धि शक्ति आयेगी। बिना करनी के कुछ नहीं मिलता। कोई किसी को कुछ नहीं देता तुम्हारा विश्वास और अलग काम करता है। कबीर साहिब फरमाते हैं:-

यह मन फटक पछारे ले, सब आपा मिट जाय।
पंगुल होय पिव पिव करे, ताको काल न खाय॥

काल कहते हैं मन को। हमारा मन काल है। जिसमें प्रेम, इश्क, आजाता है वह सब कुछ भूल जाता है फिर मन कुछ नहीं कर सकता उसे ज्ञान हो जाता है

मन पांचों के वस पड़ा मन वस नहीं पत्न।
जित देखूँ तित दौ लगी, जित भागूँ तित आय॥

कबीर साहिब कहते हैं कि हमारा मन पाँचों, काम क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार के बस में आया हुआ है और हम अर्थात रहते हैं। लोग कहते हैं काम, क्रोध, मोह, लोभ अहंकार को रोको। यह

कितनी गलत शिक्षा है । कोई भी इन पांचों को नहीं मार सकता । अगर तुम काम को मारोगे तो हीजड़े हो जाओगे । हीजड़ा कोई काम नहीं कर सकता केवल तालियाँ बजाना जानता है । अगर तुम क्रोध को मारोगे तो हर आदमी तुम्हें फुटबाल बना लेगा । तुम पेट नहीं पाल सकते अगर तुम्हें लोभ नहीं है । अगर मोह नहीं तो संसार का भला नहीं कर सकते । अगर तुममें स्वार्थपना नहीं है तो इस संसार में जीवित नहीं रह सकते । न किसी ने काम, क्रोध मोह, लोभ और अहंकार को मारा है और न कोई मार सकता है । ये केवल रोचक बातें हैं । फिर क्या करना है ? इनको अपने वश में रखना है । मानव और पशु में क्या अन्तर है ? केवल यह अन्तर है कि पशु एक दूसरे की खुराक खालेंगे इसी प्रकार अगर हम अपने आपको वश में नहीं करते तो हम भी पशु हैं । यह शिक्षा गलत नहीं है । मैंने बहुत यत्न किया कोई भी काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार को नहीं मार सकता इनका यथा योग व्यवहार चाहिये । मैंने बड़े-२ साधु महात्माओ को देखा है । क्या वे संत बन गये, उनके बच्चे नहीं हुये फिर कैसे मानू कि उन्होंने काम को मार लिया है । क्या गुरूओं, सन्तों को क्रोध नहीं आया ? जब सत्संगी बाबा सावन सिंह जी को तंग किया करते थे तो वह उन्हें सोटियों से मारा करते थे । कबीर साहिब कहते हैं:-

कबीर बेरी सबल है, एक जीव पिपु पांय ।
अपने अपने स्वाद को. बहुत नयावे नाय ॥

एक लड़का किसी लड़की को देखकर उस पर आशक हो गया और अपना जीवन बरबाद कर दिया क्योंकि उसका मन उसके वश में नहीं है । मोह प्यार के बिना निर्वाह नहीं मगर वह इतना होना चाहियें कि अगर कोई विपत्ति आ जाये तो हाय न करो यह ज्ञान है । जो मेरी समझ में आया है । मैंने बड़े बड़े सन्तों को देखा किसी ने भी काम, क्रोध, मोह लोभ को नहीं मारा । हाँ ! लोक व्यवहार

अवश्य करना चाहिए। जैसे आप किसी कार्यालय के अफसर हैं अगर आप क्रोध को छोड़ देंगे तो आपका Staff आपका कहा नहीं मानेगा। हर चीज कन्ट्रोल में रहे इसका इतना ही भाव है :—

कबीर मन तो एक है गावें तहा लगाय।
भावै गुरु की भक्ति कर, भावै विषय कमाय॥

गुरु की भक्ति क्या है? गुरु की भक्ति यह है कि किसी पूर्ण पुरुष के सतसंग में जाकर उसकी बात को सुनो, समझो और विचारो फिर उस पर अमल करो तब तो तुम गुरुभक्त हो। अगर सारी आयु गुरु के पाव ही चाटते रहे तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा जैसे तुम्हारा लड़का पाठशाला जाता है अगर वह सारा साल अपने अध्यापक की सेवा ही करता रहे उसे भोजन, कपड़े आदि ही देता रहे तो क्या वह विद्या प्राप्त कर लेगा? तुम भूल में हो। तुम यह समझते हो कि गुरु आशीर्वाद देगा और तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। यह धोखा और फरेब है। गुरु की दया को तुम नही समझते। गुरु की दया है।

जब दया गुरु की हुई, चरणों की भक्ति मिल गई।
जब निर्बलता मिट गई निश्चय की शक्ति मिल गई॥

गुरु की क्या दया है? गुर की दया यही है कि सतसग में जाकर उसकी बातों को सुनकर तुम्हारी बुद्धि निश्चयात्मक हो जाये और तुम्हें पूरा विश्वास हो जाये। हमने गुरु भक्ति को समझा ही नहीं। गीता! सुनती हो आंखें खोल आजकल स्त्रियों का गुरु भूखा नहीं मरता, आनन्द में रहता है। तुम तो अज्ञानी हो। तुम्हें सच्चाई का पता नहीं। तुम स्त्रियें साधुओं के पीछे दौड़ती फिरतीं हैं। सतसंग में जाकर बात को समझो अगर मेरा सतसंग सुनने से किसी के भ्रम नहीं जाते, किसी को सच्चा मार्ग नहीं मिलता तो मेरे जीवन पर धिक्कार शर्त यह कि कोई आदमी इस इच्छा के लिए आता हो कई बीमार आदमी मेरे पास आते हैं, कहते हैं बाबा जी! प्रसाद करदो। और दिवानो! जब सन्त अपनी बीमारी को दूर न कर सके तो तुम्हारी को

कैसे दूर करेंगे। तुम भ्रम में फँसकर क्यों लुटे जा रहे हो। तुम्हें तुम्हारे कर्मानुसार दुख सुख आता है। अगर तुम अपने विचार और मन को बदल लो और विश्वास करलो तो तुम्हारी बीमारी दूर हो सकती है। तुमने अपने ही विश्वास से पार होना है। गुरु वह है जो किसी को कमजोर ख्याल नहीं देता। मैं किसी को कमजोर बिचार नही देता। सदा आशावादी विचार देता हूँ। जो आदमी मुझ पर बिश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं और (Credit his holiness Pt. Faqir Chand ji) महाराज को मिलता है। अगर तुम्हारा विश्वास नहीं है तो कोई भी गुरु कुछ नहीं कर सकता। मैं यह काम इसलिए करता हूं कि तुम लोग मेरे बहिन भाई मातायें लुट न जावें। इन धर्मों और पंथों ने सेवक और ग्यानक बातें बताकर हम लोगों को अपना जानवर बनाया हुआ है।

आज मैं आपको क्या कहना चाहता हूं ? अपने जीवन का अनुभव कि मैं मन से कैसे निकला ? केवल इस एक विचार से कि मेरा रूप लोगों के अंतर प्रकट होता है लेकिन मैं नहीं होता तो इससे मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जो कुछ प्रकट होता है यह सब माया है मगर जब मैं भूल जाता हूं तो मैं भी इसके चक्कर में आ जाता हूं। जाग्रत में तो मैं फँसता नहीं लेकिन स्वप्ने में फँस जाता हूं क्योंकि स्वप्ने में मुझे यह ध्यान नहीं रहता कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ। किसी समय तो मुझे स्वप्ने में ध्यान होता है प्रकाश देखता और शब्द को सुनता हूँ लेकिन किसी समय ऐसे दृश्य आते हैं उनको मैं नहीं समझ सकता। मुझमें यह कमी है, मैं इनसे स्वतन्त्र न हो सका। मैंने बाबा सावनसिंह जी को लिखा कि क्या आपको स्वप्न आते हैं अगर आते हैं तो कैसे आते हैं ? उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। अगर आपने अपने मन की परख करनी है तो अपने स्वप्नों से किया करो। जैसे तुम्हारे (Sub-mind) में होगा वैसे तुम्हें स्वप्न आयेंगे। अभ्यास करते समय अपने मन को देखा करो कि किधर जाता है हर रोज जब रात को सोने लगते हो तो सोचा करो कि तुमने सारा दिन क्या कुछ किया है। जो आदमी इस ढंग से

चलता है वह अपने आप मन को सुधार सकता है और जो ऐसा नही करता वह सारी आयु भटकता रहेगा ।

मन के तौर मैंने आपको बता दिया । जब प्रकाश रूपी आत्मा प्रकृति में आता है तो जिस प्रकार की उसकी प्रकृति होगी वैसे विचार पैदा होंगे और जैसा सतसंग उसे मिलेगा, संगत मिलेगी और किताबें पढ़ेगा उसी प्रकार के संस्कार पड़ेगे आजकल तुम्हारे बच्चे सिनेमा देखते हैं, गन्दे बाबल पड़ते हैं फिर उनके मन कहाँ शुद्ध होंगे । इसलिए हमारे पूर्वज अपने बच्चों को गुरुकुल में भेजते थे । अब युग बदल गया कोई पूछता नहीं । मैं मूर्ख हूँ जो सच्ची बात बताता हूँ । क्या ससार सच्चाई सुनने के लिए तैयार है ? कोई तैयार नही ।

अब मैं मन से अलग हूं । मुझे ऊपर जाने के लिए कोई कष्ट नही होता मगर किसी समय हो जाता है । जब मैं आप लोगों का खाता हूँ तो उसका प्रभाव मुझ पर होता है । एक बार मैं नँगल गया । वहाँ के एक सज्जन का मुझ पर विश्वास था । उसका किसी एम० एल० ए० के साथ मुकद्दमा था । वह अदालत में गया उसने जज में भी मेरा ही रूप देखा, वकील में भी और जिस हैवालदार ने उसके विरुद्ध गवाही देनी थी उसमें भी मेरा ही रूप देखा और उसने उसके मेरे पक्ष में गवाही दी । वह जीत गया वह इस खुशी में मुझे और मेरे छः सात आदमियों को घर ले गया । हमारी खूब सेवा की । नगल ले जाने के इक्कीस रुपये व्यय किये । उसने यह घटना मुझे सुनाई लेकिन मेरी मूर्खता यह हुई कि मैंने उसे नही बताया कि मैं वहाँ पर नहीं गया तेरा यह भ्रम था । जब मैं सायं आकर घर में सोया तो मन छलांगें मारने लगा । बहुत यत्न किया लेकिन कुछ न बना मेरे पास गोपालदास सोया हुआ था । मैंने उसे कहा गोपालदास ! मुझे मन ने बहुत तंग किया है । फिर मुझे याद आ गया कि मैंने उसके घर खाया है । मैंने उसी समय दस रुपये

निकालकर मन्दिर के लिये रख दिये। जब मैंने ऐसा विचार किया तो मेरा मन शान्त हो गया। हम तुम लोगों के घरों का खाते हैं उसका प्रभाव अवश्य होता है। किसी की कैसी कमाई और किसी का कैसा अन्त। इसलिऐ बार-बार कहा जाता है कि नेक कमाई करो।

मैंने आपको बहुत कुछ बना दिया। याद रखो बेटियो! तुम्हारा गुरु होशियारपुर या किसी और जब तक कोई आदमी समझता है कि उसका गुरु होशियारपुर व्यास या आगरे में रहता है शायद उसे मानसिक लाभ हो जाये मगर परमार्थिक लाभ नहीं हो सकता। गीता! समझती है। जब मैं दाता को बाहर समझा करता था तो वह कहा करते थे—

फकीरा! गुरु तो तेरे पास,
तेरे तन में तेरे मन में तेरे श्वाँसों श्वाँस।
गुरु नहीं काशी गुरु नहीं मथुरा गुरु नहीं कैलाश।
ढूढ़ अपने हृदय में वहां है उनका वास॥

जब मैं उनसे बहुत प्यार किया करता था तो वह कहा करते थे—

काहे बौराना हाय फकीरवा।
तेरे घट में माल खजाना तू भया दिवाना। हाय फकिरवा
जिसकी चाह में डोलत फिरता तुझ ही में समाना।

गीता या तुम लोग जो मुझे प्यार करते हैं। मैं अपने आपको साफ रख कर जाना चाहता हूँ। मैं आपको अपने पीछे नहीं लगाना चाहता। मैं तुम्हें असली गुरु के पीछे लगाना चाहता हूँ। गुरु नाम ज्ञान, समझ और विवेक का है मगर यह जल्दी नहीं आता। जब तक किसी को पहले इश्कमजाजी नहीं है उसे एकाग्रता नहीं आयेगी। पहले एक ही सेवा करो। स्त्री पति की सेवा करे और बेटा बाप की सेवा करे। उससे क्या होगा? तुम्हारे बहुत से विचार समाप्त होकर तुममें शक्ति आ जायेगी। तुम्हें रुपया समय और त्याग करने की आदत पड़ जायेगी। अपने आप लालच को छोड़ दोगे। ऐसे आदमी जब अन्तर में अभ्यास करेंगे तो क्योंकि उन्हें त्याग करने की आदत है वे

सीधे आगे जायेंगे। यह आरम्भ की गजल है। मुझे इस बात की इच्छा नहीं कि तुम मेरा ध्यान करो। मैं तो संसार को सच्ची बात बताने आया हूँ। लोग मेरा ध्यान करते हैं मेरा रूप उनकी सहायता करता है उनके काम बन जाते हैं। मैं सोचता हूँ फकीरचन्द! अगर तू इस बात को परदे में रखेगा और झूठी मान प्रतिष्ठा लेगा तो कहां जायेगा? मैं कहीं नहीं जाता मुझे भ्रम हो गया कि इन महात्माओं को शायद इसलिए ज्यादा कष्ट हुआ क्योंकि इन्होंने बात को परदे में रखकर हम अज्ञानियों को मूर्ख बनाकर लूटा है। दातादयाल की धाम उजड़ गई, उन्होंने क्या कर लिया। मैंने बड़े २ संतों के हाल देखे। मगर यह बात इतनी सच्ची है जिसको हर आदमी ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि मन चंचल है सहारा चाहता है। मैं कहता हूँ सहारा लो। बाहरमुखी हो जाओ। गुरु रातदिन अर्थात सदा तुम्हारे साथ रहता है। ऐसा विश्वास होना चाहिए। मगर मन चंचल है ठहरता नहीं। इसे ठहराना हर एक आदमी के वश में नहीं।

आज मैंने आपको मन का रूप बता दिया कि इसे कैसे वश किया जाये। यह कन्ट्रोल में आ सकता है लेकिन इसे मार नहीं सकते। तुम मन पर सवारी करना सीखो। जो यह कहते हैं कि उनमें काम न हो हीजड़े हो जायेंगे और जो यह कहते हैं कि उनमें क्रोध न हो वे जीवन व्यतीत नहीं कर सकते। यह गलत शिक्षा है। केवल उचित और अनुचित का ध्यान रखो। यही कबीर साहिब कहते हैं—

काहु न मन बस कीन्हा, जग में काहू न मन बस कीन्हा।
श्रिंगी ऋषि से वन में लूटे, बिषै विकार न जाने।
पठई नारी भूप दसरथ ने, फकीर अयोध्या आने।
सूखे पत्र पवन भाष रहते, पारासर से शरनी।
भरमे रूप देखे वनिता को, कम कन्दला जाती।
साई सुरपति जाकी नार सुयी सी निशदिन ही संग राखी।
गौतम के घर नारी अहिल्या, निगम कहत है साखी।
पारवती सी पतनी जाके, ताको मन क्यों जेले।

खलित भये छबि देख मोहनी, हा हा करके बोले ।
एकै नाल कंवल सुत ब्रह्मा, जग अपराज कहावै ।
कहें कबीर इक मन जीते बिन जिव आराम न पावै ।

कबीर साहिब ने कह दिया, अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचंद! मन को कैसे जीता जाये ? दया तो दातादयाल की है मगर आप लोगों की कृपा से मैंने मन को काबू किया आप सत्संगी मेरे सच्चे सत्गुरु हैं । जब से मुझे पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है, यह है नही भासता है इस ज्ञान से मैं अपने मन को वश में करे सकता हूं और मेरी समझ मे कोई ढंग नहीं आया । इन्जीनियर साहिब मेरी बात को समझ रहे हो । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीरचन्द ! गुरु बन गया, दाढ़ी बढ़ाकर बकबक करता रहता तू बता, क्या तूने मन को जीत लिया ? मैंने बसरेबगदाद में बड़े २ शब्द सुने, वाणी सुनी, इतनी रोशनी देखी कि मैं रजाई में बैठा हुआ छत की कड़िया गिन सकता था । क्या फिर मैं कामी नहीं हुआ ? दाता ने कहा सन्तान पैदा करो । अगर मैं सन्तान के विचार से स्त्री के पास जाता तो कोई दुख नहीं होता मैं तो स्वाद में फँस गया । क्या मुझे शब्द, वाणी सुनने के बाद क्रोध नहीं आता था ? आता था । जब कर्मचारी आदमी गलती करते थे तो मुझे क्रोध आता था । मैंने अनुचित ढंग से धन नहीं कमाया मगर मुझे यह लालच होता था कि मेरी तरक्की (उन्नति) हो जाये । मैंने मन को कब वश किया ? जब तुम लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ मेरे अंतर प्रकट होता है, असल में यह है नहीं, भासता है तो मैं मन को छोड़ जाता हूं । अब भी ऐसा विचार आ जाता है जिसको मैं नहीं चाहता मगर आ जाता है । अब क्योंकि मुझे यह ज्ञान हो गया है कि जो कुछ भी मेरा मन सोचता है कि यह सब माया है, फिल्म है मैं इसमें फँसता नहीं । मगर स्वप्न में मैं भी फँसता नहीं । मगर स्वप्न में मैं भी फँस जाता हुँ । यह मेरे वश में नहीं हैं ।

मेरी माताओ, बहनो, भाइयो ! जो मान मुझे मिला है यह उस मालिक